लघु शोध-प्रबंध का सारांश

भारत का पड़ोसी देश होने के नाते नेपाल में भी भारत से चली खुलेपन की ताज़ी हवा बराबर पहुँचती रही है और उसके साहित्य या उपन्यासों पर भी समय-समय पर विभिन्न वादों और साहित्यिक आंदोलनों का प्रभाव रहा है। नेपाली और हिंदी भाषा की लिपि एक होने के कारण नेपाली भाषा की हिंदी भाषा के साथ समानता किसी भी अन्य भाषा से अधिक है। अतः विचारों का परस्पर आदान-प्रदान सहज ढंग से संभव हो पाता है।

उपन्यासों में रुचि होने के कारण मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध के लिए दो उपन्यासों का चयन किया। दो भिन्न भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन हेतु मेरे लघु शोध-प्रबंध के दौरान जैनेन्द्र से संबंधित सामग्री संकलन हेतु कोई विशेष समस्या नहीं रही; लेकिन हृदयचन्द्र से संबंधित सामग्री के संकलन में थोड़ी बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। नेपाली और हिंदी भाषा की लिपि एक ही है लेकिन उनके बोलने का ढंग और लिखने की शैली और भाव व्यक्त करने का अंदाज अलग-अलग है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध तुलनात्मकता की दृष्टि से दोनों रचनाकारों की नारी पात्रों की समस्याओं, संघर्षों, और द्वंद्व को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण है। यह लघु शोध चार अध्यायों में विभाजित है।

मानव-समाज के अध्ययन और अनुशीलन से यह बात सिद्ध हो चुकी है कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर मानव-हृदय और मानव-मष्तिष्क प्राय: एक ही है। प्रथम अध्याय के अंतर्गत दोनों उपन्यासकारों जैनेन्द्र कुमार और हृदयसिंह सिंह प्रधान के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय दिया गया है। जिसमें उपन्यासकारों के जन्म, शिक्षा तथा जीवन के बारे में संक्षिप्त में परिचय दिया गया है। हृदयचंद्र सिंह प्रधान का जन्म काठमाण्डौ के मारुहिती नामक स्थान में सन् 1915 में माघ महीने में हुआ था। उनका बचपन का नाम चंद्र प्रसाद था। हृदयसिंह सिंह प्रधान के नाम से पहले 'हृदय' उपसर्ग उनके माता-पिता ने रखा था। और जैनेन्द्र कुमार का जन्म 2 जनवरी 1905 में अलीगढ़ के कौड़ियागंज ज़िला में हुआ था। उनका बचपन का नाम आनंदीलाल था। सन् 1911 में वैशाख सुदी तीज के दिन गुरुकुल में उन्हें 'जैनेन्द्र' नाम दिया गया। आनंदी लाल ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि वे आगे चलकर साहित्यकार जैनेन्द्र कुमार बनेंगे। चार माह की उम्र में ही उनके सिर से पिता का साया उठ गया। दोनों लेखकों का परिचय इसलिए दिया गया ताकि उपन्यास के भाव को जानने से पहले लेखकों के जीवन के बारे में जान सके। लेखकों ने किन-किन परिस्थितियों मे उपन्यास को गढ़ा। लेखक की लेखनी में ही उनका व्यक्तित्व

झलकता है। कृति के माध्यम से लेखक को जानना आसान हो जाता है या कम से कम लेखक को करीब से जान सकते है। लेखक के विचार तक पहुँचने में उनकी व्यक्तित्व ही मददगार होते है। इसलिए किसी भी समाज के साहित्य को जानने के लिए सबसे पहले उसके आसपास का वातावरण को भी जानना आवश्यक है।

इस अध्याय के जरिए हमने यह जाना कि अशिक्षा तथा रोग में प्राय: जीवन व्यतीत करने वाले हृदयचंद्र प्रधान ने अपनी इस कमजोरी को अपना आधार बनाते हुए एक ऐसा उपन्यास गढ़ा। जिसने सामाजिक कुरीतियाँ, दोहरे व्यक्तित्व और रूढ़ संस्कारों, वैश्यावृत्ति जैसी गंभीर समस्याओं पर तीव्र प्रहार किया। उसी प्रकार जैनेंद्र का उपन्यास 'त्यागपत्र' सामाजिक मान्यताओं को नकारते हुए, समाज में रहकर भी स्वतंत्र जीवन जीने की प्रेरना देता है। जैनेंद्र के जीवन में चूंकि गांधी जी के विचारों का प्रभाव था इसलिए उनके उपन्यासों के प्रमुख पात्रों में कहीं भी हिंसक रूप नहीं झलकता है।

द्वितीय अध्याय में जैनेन्द्र और हृदयचंद्र की दृष्टि में नारी के प्रति कैसा दृष्टिकोण रहा है इसका उल्लेख किया गया है। जैनेन्द्र और हृदयचन्द्र की दृष्टि में स्त्री कैसी है तथा स्त्रियों के प्रति उनका दृष्टिकोण कैसा है? इसका विस्तार से विवेचन किया गया है। जैनेन्द्र के उपन्यासों की तीनों पात्र मृणाल, कट्टो और सुनीता में एक समानता है कि ये तीनों ही कर्तव्य के बोझ तले दबी हैं। जैनेंद्र की इन स्त्रियों ने कहीं स्वेच्छा से अपना जीवन नहीं चुना। जैनेन्द्र की स्त्रियाँ, संबंधों की मर्यादा में रहते हुए भी स्वतंत्र व्यक्तित्त्व बनाए रखना चाहती है। तो हृदयचंद्र की स्त्रियाँ समाज हित के लिए मर्यादा को तोड़ना पड़े तो भी वह पीछे नहीं हटती।

तृतीय अध्याय में जैनेन्द्र कृत हिंदी उपन्यास 'त्यागपत्र' और हृदयचंद्र कृत नेपाली उपन्यास 'स्वास्नीमान्छे' में नारी पात्रों की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। वह समाज जहां पुरुषों का वर्चस्व है और जिसके मूल्य पुरुष वर्चस्व पर आधारित है। इसके खिलाफ जाना परंपरा को तोड़ना है। अपनी महान संस्कृति की सीमाएं लांघना है। मृणाल और मोतीमाया भी इसी परम्परा नामक चक्रव्यूह में फँसती है। इस अध्याय में स्त्री को भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा गया हैं। भारतीय समाज हो या नेपाली समाज, विशेष रूप से हिन्दू समाज में स्त्री की दिन-प्रतिदिन स्थिति खराब होती जा रही है वह दुर्गा से लेकर देवदासी तक के बीच झूलती सी नजर आती है। हिन्दू समाज में स्त्री को केवल आदर्श स्त्री के रूप में देखा जाता है। यह समाज स्त्री को न प्रेम करने की इजाजत देता है और न ही स्वतंत्र रूप से जीने की स्वतन्त्रता देता है, लेकिन जैनेन्द्र का स्त्री दृष्टिकोण भिन्न है वह इस समाज के नारी संहिता का उलंघन करती है। जिसके कारण वह दंडित भी की जाती है किंतु वह इसी राह पर लगातार बढ़ती रहती है। मोतीमाया और

मृणाल इस क्रूर समाज का शिकार बनने पर मजबूर होती है। आगे भारतीय एवं नेपाली स्त्रियों की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। इसका अध्ययन करके हमने यह जाना कि भारतीय समाज में किस प्रकार नारी का शोषण आरंभ हुआ। प्राचीन युग में तो नारी हर प्रकार से सम्मानित मानी जाती थी। उनके लिए यह भी कहा जाता था कि जहां नारी की पूजा होती है वही देवता वास करते है, लेकिन आज आधुनिक युग में नारी की स्थिति बिल्कुल भिन्न पायी जाती है। नेपाली समाज में स्त्रियों और पुरुषों के बीच लैंगिक विषमता के बारे में गंभीर चर्चा की गई है। जिस तरह कि मनुष्य यदि पुरुष के रूप में जन्म ले तो वह वंदनीय माना जाता है और वहीं मनुष्य यदि स्त्री के रूप में जन्म ले तो वह निंदनीय मानी जाती है। हमारा समाज अभी भी स्त्री और पुरुष के बीच बहुत बड़ी खाई मानकर चलता है। अतः नतीजा यह निकलता है कि स्त्रियों को उनकी अस्मिता एवं अधिकार को बचाने के लिए अधिक संघर्ष करना पड़ता है।

चतुर्थ अध्याय में दोनों उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस तुलनात्मक अध्ययन के लिए दो उपन्यासों का चयन किया गया है। जिनमें से एक हिंदी उपन्यास जैनेन्द्र कुमार कृत त्यागपत्र है और दूसरा नेपाली उपन्यास हृदयसिंह सिंह प्रधान कृत स्वास्नीमान्छे है। उक्त दोनों उपन्यास नारीप्रधान है दोनों में पुरुष वर्चस्व और नारीत्व के हनन का चित्रण है। दोनों में एक बात स्पष्ट है कि देशकाल और समाजिक परिवेश कोई भी हो सबमें पूर्ण रूप में समानता पायी जाती है। नारी चाहे जिस वर्ग की हो, वह शोषण से मुक्त नहीं हो सकती है, हर देश में स्त्री की वही स्थिति देखी जाती है। दोनों उपन्यासों में हिंदू परंपरा की जकड़न साफ-साफ देखने को मिलता है। 'स्वास्नीमान्छे' में नेपाली पुरुषों द्वारा प्रताड़ित एक स्त्री की कहानी है। एक तरफ जहाँ पुरुष जात अपनी पत्नी मोतीमाया को प्रताड़ित करने में कोई भी कसर बाकी नहीं रखता है। वहीं दूसरी तरफ पत्नि मोतीमाया पति द्वारा दी जाने वाली यातनाओं को भी अपनी नियति समझ कर स्वीकार लेती है। वह इस नियति को अपना धर्म समझती है और अपने पति के द्वारा किए गए अत्याचार को सहती रहती है। लेखक हृदयचन्द्र सिंह प्रधान ने अपने इस उपन्यास में एक परित्यक्त स्त्री का चरित्र गढ़ा है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में उपरोक्त चारों अध्यायों के पश्चात् उपसंहार को रखा गया है। इसमें दोनों उपन्यासों की तुलनात्मक अध्ययन से निष्कर्ष क्या निकलता है के बारे में चर्चा की गई है। इस प्रकार देखा जाए तो दोनों उपन्यासों में एक बात साफ़ स्पष्ट की गई है कि स्त्रियाँ भिन्न भिन्न हालात से ग्रस्त होकर अंततः वैश्यावृति में कदम रख देती है। स्त्रियों की वहां तक पहुँचने में मुख्य रूप से पितृसत्ता मानसिकता से ग्रस्त पुरुष और परिस्थितियां दोषी है, लेकिन सजा स्त्री को मिलती है। कोई राह न मिलने के कारण

स्त्रियाँ समाज से बहिष्कार की जाती है तथा पुरुषों द्वारा अपना सर्वस्व लूटा चुकने के बाद उन स्त्रियों के पास आत्महत्या करने या वैश्यावृत्ति में जाने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं रह जाता। इन दोनों उपन्यासों में और एक बात स्पष्ट हुई है कि स्त्रियां वैश्यावृति में स्वयं नहीं उतरती बल्कि उन्हें बलपूर्वक वहां भेजा जाता है। यहां पर दूसरी बात यह भी स्पष्ट होती है कि स्त्रियाँ कही की भी हो, किसी भी देश की हो, किसी भी परिवेश से क्यों न आयी हो सबकी स्थिति लगभग एक जैसी ही है। वैश्यावृत्ति जैसे कार्य में लिप्त रहकर भी कोई वैश्या समाज की मंगलकामना कर सकती है यह मैंने स्वास्नीमान्छे की मैयानानी के माध्यम से जाना। वह समाज का उद्धार चाहती है इसलिए इस कार्य को गलत नहीं मानती। वह वैश्यालय को सिर्फ एक कोठा नहीं मानती बल्कि एक पवित्र मंदिर भी मानती है। वैश्यावृत्ति में जाने वाली हर स्त्री स्वेच्छा से नहीं जाती बल्कि उसके पीछे पुरुष मानसिकता या फिर समाज के रुढ़ परंपराएं जिम्मेदार रहते है। भाषायी विभिन्नता के बावजूद दोनों रचनाकारों अपने-अपने परिवेश के अनुसार उपन्यासों में पात्रों का निर्माण करते हैं। इस शोध कार्य के पश्चात निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि तुलनात्मक अध्ययन विविध जातियों, भाष-भाषियों को चिंतन के धरातल पर निकट लाता है और उनमें सृजनात्मक भाव-विकास को बढ़ावा देता है तथा समानता और भाईचारे की भावना को प्रोत्साहित करता है। नेपाल और भारत पड़ोसी देश है अत: इस तुलनात्मक अध्ययन के जरिए किए गए प्रयास इन दोनों पड़ोसी देशों के घनिष्ठ संबंध को और भी मजबूत बनाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।